PAPER - 5, UNIT - I, Sec - A

Contribution of Carl Ritter (भाग - 2)

Methodology :-

(3) Chorological method :-

रिटर की विशेष रूचि क्षेत्रों के सम्पूर्ण तथ्यों के अध्ययन में थी। उनके अनुसार ऐसे अध्ययन क्षेत्रों को चारित्रिक लक्षण प्रदान करते हैं, रिटर के अनुसार विभिन्न क्षेत्रीय स्वरूप को कारण एवं प्रभाव के आधार पर स्पष्ट करना चाहिए, अपनी महाद्वीपीय प्रादेशिक विभाजन व्यवस्था मे भी उसके अर्द्धकुण्डे मे क्षेत्रीय अध्ययन को शामिल किया है।

(4) Deductive method :-

रिटर के लेखों, पत्रिकाओं मे Deductive method का भी प्रयोग हुआ है। जिसमें उन्होने मौलिक कल्पना अथवा पूर्व निश्चित तथ्य के आधार पर नए निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

(5) Systematic method :-

प्रत्यक्ष रूप मे रिटर ने भूगोल मे क्रमबद्ध अध्ययन को अधिक महत्त्व नहीं दिया है। किन्तु वह भूभौतिक हुआ है, वे भौतिक विज्ञान के समग्र रूप मे वर्णन

को ही क्रमबद्ध अध्ययन मानते थे। जबकि पृथ्वी के प्रादेशिक विभाजन एवं उसकी व्याख्या के क्रमबद्ध को अध्ययन को प्रादेशिक अध्ययन का अंग माना।

⑥ Cartographic method :-

रिटर ने भौगोलिक वर्णन के लिए मानचित्र विधि को भी एक प्रमुख विधि माना है। इन्होंने यूरोप के कई भौतिक मानचित्र बनाए है। इसके साथ उनकी ग्रंथावली में प्रादेशिक मानचित्र भी दिए गए है।

⑦ Analysis and synthesis method:-

रिटर ने प्रेक्षणों का विश्लेषण करना, उनके तथ्यों की तुलना करना और बाद में विभिन्न अंगो को एकत्रीकरण करके उनके संश्लेषण द्वारा क्षेत्रों के सभी तथ्यो का सम्मिलित रूप देखना और अंत में सामान्यीकरण करना - जैसे विधि द्वारा भूगोल के वैज्ञानिक ढाँचा प्रदान किया।

Concept of Ritter Regarding Geography

हम्बोल्ट के समकालीन एवं कुछ हद तक उनके विचार से प्रभावित रिटर उनसे मिलने के पूर्व ही अपना स्वतंत्र विचार विकसित कर चुके थे। इनके विचारों के मुख्य तत्वों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है:-

CONCEPT OF RITTER

- नियतिवादी
- शुद्ध भूगोल का विरोधी
- प्रादेशिक व्यक्तित्व तथा पूर्ण की संकल्पना
- अनेकता में एकता का सिद्धांत
- ईश्वरवादी संकल्पना
- भौगोलिक क्षेत्र की संकल्पना
- धरातलीय विभाजन की संकल्पना
- Man Centered Concept
- Principle of Spatial Relationship
- Purpose and subject matter of Geography.

◉ नियतिवादी :- रिटर प्रकृति के प्रभाव को यथोचित स्थान देते हुए मानते हैं कि प्रकृति मानव तथा भूमि पर गहरा प्रभाव डालती है इन्होंने यूरोप के इतिहास एवं उसकी महत्ता को इसी आलोक में समझाया है। वे राजनीतिक विभाग की तुलना में प्राकृतिक विभाजन के महत्व को अधिक व्यापक मानते हैं।

◉ अनेकता में एकता का सिद्धांत :- रिटर की यह मौलिक संकल्पना है इनके अनुसार किसी प्रदेश के सभी जैव एवं अजैव तत्वों में मौलिक एकता होती है। जिससे मानव अपना अपना सांस्कृतिक वातावरण तैयार करता है। अनेकता में एकता का अर्थ है कि प्राकृतिक सीमा से घिरा प्रत्येक क्षेत्र जलवायु, उत्पादन संस्कृति, जनसंख्या एवं इतिहास के संदर्भ में एकता प्रदर्शित करता है।

◉ ईश्वरवादी संकल्पना :- ईश्वरवादी होने के कारण रिटर ने प्रकृति के कई तथ्यों को इसी दृष्टिकोण से व्याख्या किया है। इनके अनुसार पृथ्वी की रचना उद्देश्यपूर्ण की गई है।

(i) भौगोलिक क्षेत्र की संकल्पना :-

रिटर ने भूगोल के क्षेत्र को तीन घटकों में विभाजित किया है।

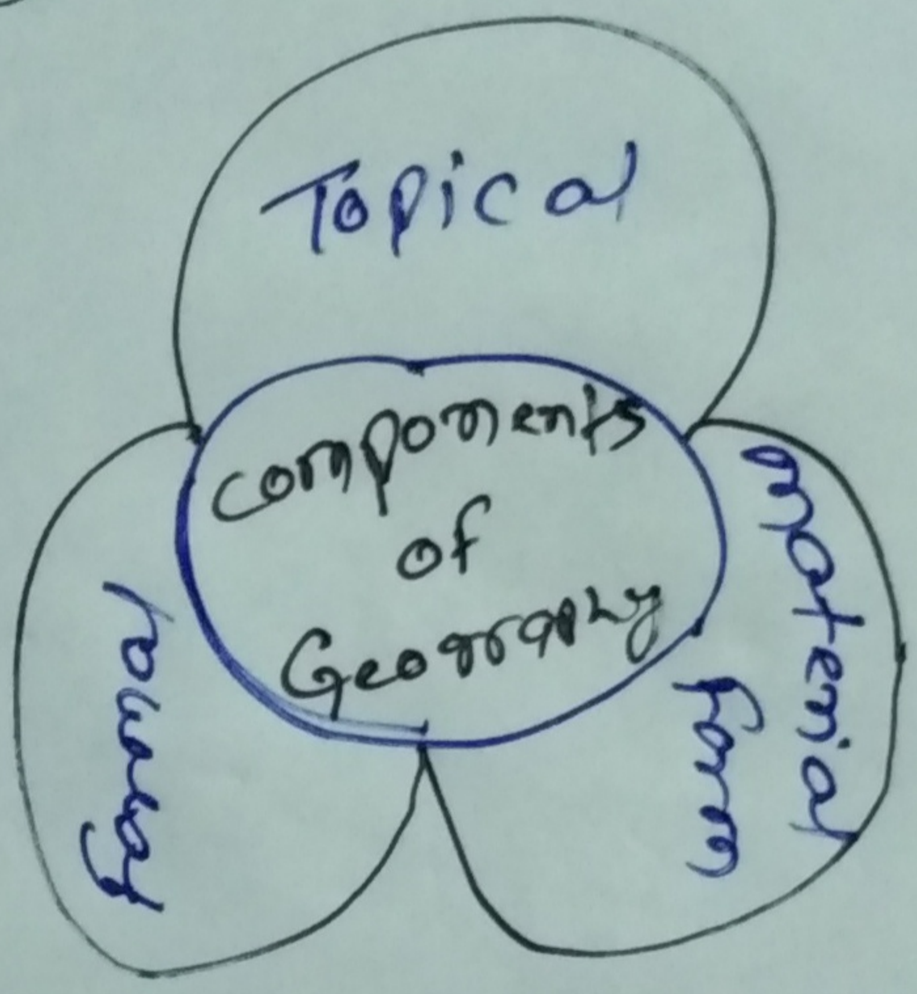

(i) **Topical (लक्षणीय)** :- इसका संबंध पृथ्वी के प्राथमिक या स्थिर स्थल रूप (महादेश) से है।

(ii) **Formal (स्वरूपीय)** :- सुस्पष्ट एवं गतिशील लक्षण जैसे - गतिशील सागर, वायुमंडल आदि।

(iii) **भौतिक स्वरूप (material form)** :- इसके जैव पदार्थों में वनस्पति एवं जीवों और अजैव पदार्थों में मुख्यतः खनिज पदार्थ को शामिल किया गया है।

उपरोक्त तीनों घटकों को वे प्राकृतिक वातावरण का अंश मानते हैं।

———— :0: ————

Dr. Mukul Kumar